Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप का स्थानिक-कालिक परिवर्तन एवं कृषि विकास: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. रत्नेश कुमार खन्ना* कु. संस्कृति शास्त्री**

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी (भूगोल) डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – कृषि किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, आजीविका तथा ग्रामीण सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण आधार है और किसी क्षेत्र के कृषि विकास की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए वहाँ के फसल प्रतिरूप, फसल विविधीकरण, फसल गहनता, सिंचाई, कृषि तकनीक, मशीनीकरण तथा बाजार व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध-पत्र मेंबिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप के स्थानिक-कालिक परिवर्तन एवं कृषि विकासका भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु वर्ष 2020 की प्रशासनिक संरचना को आधार मानते हुए जिले की 11 चयनित तहसीलों से एक-एक ग्राम का चयन किया गया तथा प्रत्येक चयनित ग्राम से 50 कृषक परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। इस प्रकार कुल 11 ग्रामों के 550 कृषक परिवारों को अध्ययन की प्राथमिक इकाई बनाया गया। चयनित ग्रामों में अमतरा, चुराघाट, अकोला, अमली, अचानकपुर, उमरमरा, अकलतरी, सीपत, अमेरी, बोडसरा एवं बेलगहना शामिल हैं। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि बिलासपुर जिले का फसल प्रतिरूप पूर्णत: स्थिर नहीं है, बल्कि सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, उन्नत बीज, कृषि मशीनीकरण, बाजार संपर्क, कृषि ऋण, कृषकों की आय तथा तकनीकी जानकारी में परिवर्तन के साथ इसमें निरंतर बदलाव आया है। धान अभी भी जिले की प्रमुख फसल है, किंतु इसके साथ गेहूँ, चना, मटर, तिलहन एवं अन्य फसलों के क्षेत्र में वृद्धि तथा फसल विविधीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि जिन क्षेत्रों में सिंचाई, मशीनीकरण तथा बाजार सुविधाएँ अपेक्षाकृत बेहतर हैं, वहाँ फसल गहनता और विविधीकरण का स्तर अधिक है। इसके विपरीत सीमित सिंचाई एवं कमजोर बाजार संपर्क वाले क्षेत्रों में कृषि अभी भी अपेक्षाकृत पारंपरिक स्वरूप में दिखाई देती है। अत: जिले में संतुलित कृषि विकास के लिए सिंचाई विस्तार, फसल विविधीकरण, कृषि तकनीकी प्रसार, संस्थागत ऋण, भंडारण, प्रसंस्करण तथा बाजार संपर्क को मजबूत करना आवश्यक है।

शब्द कुंजी – फसल प्रतिरूप, स्थानिक-कालिक परिवर्तन, कृषि विकास, फसल विविधीकरण, फसल गहनता, सिंचाई, मशीनीकरण, बिलासपुर।

प्रस्तावना – कृषि मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार, खाद्य सुरक्षा तथा क्षेत्रीय विकास का महत्वपूर्ण आधार है। किसी क्षेत्र की कृषि व्यवस्था केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि भूमि उपयोग, मृदा, जलवायु, वर्षा, सिंचाई, तकनीकी विकास, श्रम, बाजार, परिवहन, कृषि ऋण तथा कृषकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इन सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव से किसी क्षेत्र में विभिन्न फसलों का क्षेत्रीय वितरण निर्धारित होता है, जिसे फसल प्रतिरूप कहा जाता है। समय के साथ जब कृषकों द्वारा किसी फसल के क्षेत्रफल में वृद्धि या कमी की जाती है, नई फसलों को अपनाया जाता है अथवा पारंपरिक फसलों के स्थान पर अधिक लाभकारी फसलों का चयन किया जाता है, तो फसल प्रतिरूप में परिवर्तन उत्पन्न होता है। इसलिए फसल प्रतिरूप का अध्ययन किसी क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था में हो रहे परिवर्तन को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ के कृषि दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शामिल है। यहाँ कृषि गतिविधियाँ प्राकृतिक परिस्थितियों, वर्षा, मृदा, सिंचाई संसाधनों तथा ग्रामीण जनसंख्या की कृषि पर निर्भरता से प्रभावित होती हैं। जिले में धान की महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन बदलती आर्थिक आवश्यकताओं, सिंचाई सुविधाओं, तकनीकी प्रगति तथा बाजार की मांग के कारण कृषि व्यवस्था में विविधता की प्रवृत्ति विकसित हुई है। कृषकों द्वारा रबी फसलों, विशेषकर गेहूँ, चना, मटर तथा तिलहन को अपनाने के साथ द्विफसली क्षेत्र का विस्तार भी कृषि परिवर्तन का महत्वपूर्ण संकेतक है। इस परिवर्तन को केवल फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि या कमी के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि इसे कृषि गहनता, फसल विविधीकरण, उत्पादकता, आय, तकनीकी अपनाव और ग्रामीण जीवन स्तर के व्यापक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप के स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन का भौगोलिक विश्लेषण करना तथा इस परिवर्तन और कृषि विकास के मध्य संबंध को स्पष्ट करना है। इसके अंतर्गत जिले में वर्तमान फसल प्रतिरूप एवं प्रमुख फसलों के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन, समय के साथ फसलों के क्षेत्रफल में हुए परिवर्तन का विश्लेषण, फसल गहनता एवं फसल विविधीकरण की स्थिति का अध्ययन तथा सिंचाई, मृदा, जलवायु, कृषि तकनीक, मशीनीकरण, बाजार, कृषि ऋण एवं सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव का परीक्षण

किया गया है। इसके अतिरिक्त चयनित कृषक परिवारों की कृषि स्थिति, भूमि स्वामित्व, कृषि आय, रोजगार तथा कृषि विकास से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करते हुए जिले में कृषि विकास की संभावनाओं एवं क्षेत्र-विशिष्ट नीतिगत उपायों की पहचान करना भी अध्ययन का उद्देश्य है।

परिकल्पना

अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं:

प्रथम परिकल्पना:फसल प्रतिरूप में होने वाले परिवर्तन को स्थानिक एवं कालिक दशाएँ प्रभावित करती हैं।

द्वितीय परिकल्पना:कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन से कृषि विकास की दर में वृद्धि होती है।

तृतीय परिकल्पना:फसल प्रतिरूप में परिवर्तन को भौगोलिक दशाएँ प्रभावित करती हैं तथा क्षेत्र की भौतिक संरचना का कृषि कार्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि – बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में से एक है। जिले की कृषि व्यवस्था पर मानसूनी वर्षा, मृदा की प्रकृति, स्थलाकृति तथा जल संसाधनों का प्रभाव दिखाई देता है। जिले की प्रमुख नदी अरपा है, जबकि अन्य नदी तंत्र एवं स्थानीय जल संसाधन भी कृषि गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए नहरों तथा नलकूपों का उपयोग किया जाता है। वर्षा का अधिकांश भाग मानसून अवधि में प्राप्त होने के कारण कृषि गतिविधियों में वर्षा की समयबद्धता का विशेष महत्व है। ऐसी परिस्थितियों में सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता फसल चयन तथा द्विफसली कृषि के विस्तार को प्रभावित करती है।

जिले की भौगोलिक विविधता के कारण सभी क्षेत्रों में कृषि विकास का स्तर समान नहीं है। अपेक्षाकृत बेहतर सिंचाई, परिवहन एवं बाजार संपर्क वाले क्षेत्रों में कृषि का व्यावसायीकरण तथा फसल विविधीकरण अधिक दिखाई देता है, जबकि दूरस्थ अथवा सीमित संसाधन वाले क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि पद्धतियों की भूमिका अधिक बनी रहती है। इस स्थानिक विविधता के कारण बिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप का अध्ययन भौगोलिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।

शोध विधि एवं आँकड़ों के स्रोत – प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं भौगोलिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े चयनित ग्रामों के कृषक परिवारों से प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण, संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किए गए। नमूना चयन में वर्ष 2020 की प्रशासनिक संरचना को आधार बनाते हुए 11 चयनित तहसीलों से एक-एक ग्राम का चयन किया गया तथा प्रत्येक ग्राम से 50 कृषक परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। इस प्रकार कुल 550 कृषक परिवारप्राथमिक सर्वेक्षण के अंतर्गत शामिल किए गए। सर्वेक्षण में भूमि स्वामित्व, कृषि भूमि, सिंचित एवं असिंचित भूमि, फसल क्षेत्रफल, वर्तमान फसल प्रतिरूप, फसल परिवर्तन, कृषि तकनीक, मशीनीकरण, कृषि आय, बाजार संपर्क तथा कृषि संबंधी समस्याओं से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित की गईं।

तालिका 1: प्राथमिक सर्वेक्षण हेतु चयनित ग्राम

क्र.	तहसील	चयनित ग्राम	परिवार
1	बिलासपुर	अमतरा	50
2	बिल्हा	चुराघाट	50
3	मस्तूरी	अकोला	50
4	कोटा	अमली	50
5	तखतपुर	अचानकपुर	50
6	रतनपुर	उमरमरा	50
7	बेलतरा	अकलतरी	50
8	सीपत	सीपत	50
9	सकरी	अमेरी	50
10	बोदरी	बोडसरा	50
11	बेलगहना	बेलगहना	50
	कुल	11 ग्राम	550

द्वितीयक आँकड़ों के लिए जिला सांख्यिकी अभिलेख, कृषि विभाग, जिला प्रशासन, जनगणना संबंधी सामग्री, केंद्रीय भूजल बोर्ड तथा उपलब्ध सरकारी कृषि आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों को तालिकाओं एवं प्रतिशतों के माध्यम से व्यवस्थित कर तुलनात्मक एवं क्षेत्रीय विश्लेषण किया गया।

बिलासपुर जिले में वर्तमान फसल प्रतिरूप– बिलासपुर जिले में वर्तमान फसल प्रतिरूप में धान का प्रमुख स्थान है। खरीफ ऋतु में धान का व्यापक क्षेत्रीय विस्तार जिले की कृषि व्यवस्था की प्रमुख विशेषता है, जबकि रबी ऋतु में सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर गेहूँ, चना, मटर, लथायरस तथा विभिन्न तिलहनों का उत्पादन किया जाता है। कृषि विभाग द्वारा भी जिले में धान के साथ दलहन, तिलहन एवं अन्य फसलों के विस्तार तथा द्विफसली क्षेत्र को बढ़ाने पर बल दिया जाता है। इस प्रकार वर्तमान कृषि व्यवस्था में पारंपरिक धान-प्रधान स्वरूप के साथ धीरे-धीरे विविधीकृत फसल प्रतिरूप का विकास दिखाई देता है।

प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अचानकपुर एवं सीपत जैसे क्षेत्रों में कृषि गतिविधियों का स्तर अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता है, जबकि उमरमरा एवं बेलगहना जैसे क्षेत्रों में सीमित सिंचाई एवं संसाधनों के कारण कृषि गतिविधियों की तीव्रता अपेक्षाकृत कम पाई गई। यह अंतर इस बात को स्पष्ट करता है कि जिले के भीतर कृषि विकास एक समान नहीं है तथा स्थानीय भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ फसल चयन को प्रभावित करती हैं।

फसल प्रतिरूप में स्थानिक-कालिक परिवर्तन– अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक सूचनाओं के अनुसार बिलासपुर जिले में पिछले समय की तुलना में खाद्यान्न फसलों के प्रभुत्व में कुछ कमी तथा दलहन एवं तिलहन फसलों के महत्व में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। चयनित कृषक परिवारों में फसल विविधीकरण की प्रवृत्ति उन क्षेत्रों में अधिक पाई गई जहाँ सिंचाई, कृषि तकनीक, बाजार संपर्क एवं मशीनीकरण की सुविधाएँ अपेक्षाकृत बेहतर हैं। पहले जहाँ कृषि व्यवस्था मुख्यत: धान पर केंद्रित थी, वहीं वर्तमान में अनेक कृषक धान के बाद गेहूँ, चना, मटर एवं तिलहन जैसी रबी फसलों को अपनाने लगे हैं। इससे कृषि भूमि का वर्षभर उपयोग बढ़ा है और फसल गहनता में वृद्धि हुई है।

तालिका 2: चयनित ग्रामों में फसल गहनता का अनुमानित स्वरूप

ग्राम	शुद्ध बोया क्षेत्र (हेक्टेयर)	सकल फसली क्षेत्र	फसल गहनता (%)
अमतरा	42	49.6	118
चुराघाट	45	54.5	121
अकोला	47	58.3	124
अमली	41	47.6	116
अचानकपुर	50	64.5	129
उमरमरा	38	41.0	108
अकलतरी	44	52.4	119
सीपत	48	60.5	126
अमेरी	43	52.5	122
बोडसरा	46	55.2	120
बेलगहना	36	38.2	106

तालिका से स्पष्ट है कि चयनित ग्रामों में फसल गहनता में उल्लेखनीय स्थानिक अंतर पाया जाता है। अचानकपुर में अनुमानित फसल गहनता 129 प्रतिशत तथा सीपत में 126 प्रतिशत है, जबकि बेलगहना में यह लगभग 106 प्रतिशत और उमरमरा में 108 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि सिंचाई एवं अन्य कृषि सुविधाओं की उपलब्धता फसल गहनता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

फसल प्रतिरूप परिवर्तन के प्रमुख निर्धारक– फसल प्रतिरूप में परिवर्तन किसी एक कारक का परिणाम नहीं है, बल्कि प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों की संयुक्त प्रक्रिया है। भौगोलिक दृष्टि से मृदा, जलवायु, वर्षा, स्थलाकृति एवं जल उपलब्धता फसल चयन की आधारभूत परिस्थितियाँ निर्धारित करते हैं। इसके बाद सिंचाई, कृषि तकनीक, मशीनीकरण, बाजार, कृषि मूल्य, परिवहन, ऋण तथा सरकारी योजनाएँ कृषकों के निर्णय को प्रभावित करती हैं। प्राथमिक सर्वेक्षण से यह संकेत मिलता है कि वर्षा एवं जलवायु को कृषकों द्वारा फसल चयन का महत्वपूर्ण आधार माना गया, जबकि सिंचाई सुविधा को द्विफसली एवं विविधीकृत कृषि के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया।कृषि तकनीक और मशीनीकरण ने भी फसल प्रतिरूप में परिवर्तन को गति प्रदान की है। उन्नत बीज, आधुनिक कृषि उपकरण, सिंचाई उपकरण तथा कृषि यंत्रों के उपयोग से कृषि कार्य की समयबद्धता बढ़ी है और श्रम की आवश्यकता में कमी आई है। बाजार संपर्क में सुधार होने से किसानों के लिए ऐसी फसलों का चयन अधिक आकर्षक हुआ है जिनसे बेहतर आर्थिक प्रतिफल प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार संस्थागत कृषि ऋण एवं सरकारी कृषि योजनाओं ने कृषि निवेश की क्षमता को प्रभावित किया है।

कृषि विकास की वर्तमान दशा– बिलासपुर जिले में कृषि विकास की वर्तमान स्थिति को सिंचाई, मशीनीकरण, तकनीकी अपनाव, बाजार संपर्क तथा कृषि आय के आधार पर समझा जा सकता है। प्राथमिक सर्वेक्षण के अनुमानित विश्लेषण में चयनित कृषक परिवारों में लगभग 72.2 प्रतिशत परिवारों के पास सिंचाई सुविधा, 52.2 प्रतिशत में कृषि मशीनरी का उपयोग, तथा लगभग 61.6 प्रतिशत में उन्नत कृषि तकनीक अथवा उन्नत बीजों का उपयोगपाया गया। लगभग 61 प्रतिशत परिवारों का नियमित बाजार संपर्क था तथा लगभग 54.3 प्रतिशत परिवारों ने कृषि ऋण प्राप्त करने की जानकारी दी। इन संकेतकों से यह स्पष्ट होता है कि कृषि व्यवस्था पारंपरिक स्वरूप से आगे बढ़कर तकनीक एवं बाजार से जुड़ रही है, हालांकि विकास का स्तर सभी क्षेत्रों में समान नहीं है।

तालिका 3: कृषि विकास के प्रमुख संकेतक

संकेतक	औसत स्थिति (%)
सिंचाई सुविधा	72.2
कृषि मशीनीकरण	52.2
उन्नत तकनीक/बीज	61.6
नियमित बाजार संपर्क	61.0
कृषि ऋण प्राप्त करने वाले परिवार	54.3
कृषि को प्रमुख आय स्रोत मानने वाले परिवार	66.3

कृषि विकास में अभी भी अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। छोटे एवं सीमांत कृषकों के पास भूमि का आकार सीमित होने के कारण आधुनिक मशीनरी का व्यक्तिगत उपयोग कठिन होता है। सिंचाई संसाधनों की असमान उपलब्धता, कृषि ऋण तक सीमित पहुँच, बढ़ती कृषि लागत, उपज के मूल्य में अनिश्चितता, भंडारण एवं प्रसंस्करण की अपर्याप्त सुविधाएँ तथा तकनीकी जानकारी की कमी कृषि विकास की प्रमुख बाधाएँ हैं। इसलिए केवल उत्पादन बढ़ाने के स्थान पर कृषि मूल्य श्रृंखला के प्रत्येक चरण को मजबूत करना आवश्यक है

फसल विविधीकरण एवं कृषि विकास का संबंध– फसल विविधीकरण कृषि विकास की महत्वपूर्ण रणनीति है क्योंकि यह कृषकों को एक ही फसल पर निर्भरता से मुक्त करते हुए आय के अनेक स्रोत उपलब्ध कराता है। बिलासपुर जिले में धान के साथ दलहन, तिलहन, गेहूँ तथा अन्य फसलों को अपनाने से कृषि भूमि का अधिक प्रभावी उपयोग संभव हुआ है। विशेष रूप से सिंचित क्षेत्रों में खरीफ के बाद रबी फसलों का विस्तार कृषि गहनता तथा वार्षिक कृषि उत्पादन को बढ़ाने में सहायक है। फसल विविधीकरण से बाजार जोखिम को कम करने, मृदा उर्वरता को बनाए रखने तथा कृषक आय को स्थिर करने की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं।

अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि जिन ग्रामों में फसल विविधीकरण, सिंचाई एवं तकनीकी अपनाव का स्तर अधिक है, वहाँ कृषि आय तथा कृषि विकास के अन्य संकेतक भी अपेक्षाकृत बेहतर हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि फसल प्रतिरूप में परिवर्तन और कृषि विकास के बीच सकारात्मक संबंध मौजूद है। हालांकि विविधीकरण की सफलता के लिए बाजार, भंडारण, प्रसंस्करण और मूल्य समर्थन की पर्याप्त व्यवस्था भी आवश्यक है

प्रमुख परिणाम– अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि बिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप मेंस्थानिक एवं कालिक दोनों प्रकार का परिवर्तनहुआ है। धान अभी भी कृषि व्यवस्था की आधारभूत फसल है, किंतु गेहूँ, चना, मटर एवं तिलहन जैसी फसलों का महत्व बढ़ा है। सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्रों में द्विफसली कृषि तथा फसल गहनता अधिक पाई गई है। कृषि मशीनीकरण और उन्नत तकनीक के उपयोग ने भी फसल परिवर्तन को गति प्रदान की है। बाजार संपर्क एवं कृषि आय में वृद्धि की संभावना ने किसानों को अधिक लाभकारी फसलों की ओर आकर्षित किया है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि कृषि विकास की स्थिति में उल्लेखनीयक्षेत्रीय असमानताहै। बेहतर सिंचाई, परिवहन, बाजार और तकनीकी सुविधाओं वाले क्षेत्रों में कृषि अधिक गहन एवं विविधीकृत है, जबकि संसाधन-सीमित क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि पद्धतियों का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है। अत: जिले के लिए एक समान कृषि विकास नीति की अपेक्षाक्षेत्र-विशिष्ट कृषि विकास रणनीतिअधिक प्रभावी हो सकती है।

सुझाव एवं नीतिगत उपाय– बिलासपुर जिले में कृषि विकास को अधिक संतुलित एवं टिकाऊ बनाने के लिए सबसे पहले सिंचाई सुविधाओं का विस्तार उन क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जहाँ वर्तमान में कृषि मुख्यत: वर्षा पर निर्भर है। जल संरक्षण, खेत–तालाब, चेकडैम, नलकूप एवं सूक्ष्म सिंचाई जैसी व्यवस्थाओं को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बढ़ावा दिया जाना चाहिए। धान पर अत्यधिक निर्भरता को कम करते हुए दलहन, तिलहन, गेहूँ, सब्जियों तथा अन्य लाभकारी फसलों के लिए क्षेत्र–विशिष्ट फसल योजना विकसित की जानी चाहिए। छोटे एवं सीमांत कृषकों के लिए कस्टम हायरिंग सेंटर तथा सामुदायिक कृषि मशीनरी की व्यवस्था उपयोगी होगी।

कृषकों को उन्नत बीज, मृदा परीक्षण, जल प्रबंधन, कीट नियंत्रण तथा जलवायु–स्मार्ट कृषि तकनीकों के संबंध में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कृषि ऋण की सरल एवं समयबद्ध उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ फसल बीमा को प्रभावी बनाया जाना चाहिए। उत्पादन के साथ–साथ भंडारण, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन एवं विपणन सुविधाओं को विकसित करना आवश्यक है, ताकि कृषकों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हो सके। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित लघु उद्योग एवं प्रसंस्करण इकाइयों को बढ़ावा देकर स्थानीय रोजगार के अवसर भी विकसित किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष– समग्र अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है किबिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप एक परिवर्तनशील एवं गतिशील कृषि प्रणाली के रूप में विकसित हो रहा है।जिले की कृषि व्यवस्था में धान का प्रमुख स्थान बना हुआ है, किंतु इसके साथ दलहन, तिलहन एवं अन्य रबी फसलों का विस्तार फसल विविधीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। सिंचाई सुविधाओं, उन्नत कृषि तकनीक, मशीनीकरण, बाजार संपर्क तथा कृषि ऋण ने इस परिवर्तन को गति प्रदान की है। दूसरी ओर मृदा, जलवायु, वर्षा, स्थलाकृति तथा जल उपलब्धता जैसे भौगोलिक कारक फसल चयन की आधारभूत परिस्थितियों को निर्धारित करते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कृषि विकास का स्तर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में समान नहीं है। जहाँ सिंचाई एवं बाजार सुविधाएँ बेहतर हैं, वहाँ फसल गहनता, विविधीकरण एवं कृषि तकनीक का उपयोग अधिक है। इसलिए बिलासपुर जिले में कृषि विकास को केवल उत्पादन वृद्धि के आधार पर नहीं, बल्किफसल विविधीकरण, संसाधनों के कुशल उपयोग, कृषक आय, तकनीकी उन्नयन, बाजार संपर्क और टिकाऊ कृषिके व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। भविष्य में सिंचाई विस्तार, क्षेत्र–विशिष्ट फसल योजना, मशीनीकरण, संस्थागत ऋण, भंडारण एवं प्रसंस्करण सुविधाओं के विकास से जिले की कृषि अर्थव्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन यह स्थापित करता है कि बिलासपुर जिले में फसल प्रतिरूप का स्थानिक–कालिक परिवर्तन प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों की अंत:क्रिया का परिणाम है तथा यह परिवर्तन कृषि विकास की दिशा और गति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप फसल विविधीकरण एवं आधुनिक कृषि तकनीकों का संतुलित उपयोग ही जिले में भविष्य के टिकाऊ कृषि विकास का प्रमुख आधार बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय।कृषि सांख्यिकी एक नजर में (*Agricultural Statistics at a Glance*).नई दिल्ली: कृषि एवं किसान कल्याण विभाग।
2. भारत सरकार, जनगणना विभाग।भारत की जनगणना 2011: जिला जनगणना पुस्तिका, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. भारत सरकार, केंद्रीय भूजल बोर्ड।बिलासपुर जिला भूजल सूचना पुस्तिका एवं जिला रिपोर्ट।जल संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. छत्तीसगढ़ शासन, कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग।छत्तीसगढ़ में कृषि विकास एवं फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय विवरण।रायपुर: छत्तीसगढ़ शासन।
5. छत्तीसगढ़ शासन, अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी संचालनालय।जिला सांख्यिकी पुस्तिका: बिलासपुर जिला।रायपुर: योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग।
6. जिला प्रशासन, बिलासपुर।बिलासपुर जिलारू कृषि, भौगोलिक एवं सांख्यिकीय विवरण।बिलासपुर: जिला प्रशासन, छत्तीसगढ़।
7. मिश्रा, आर. पी. एवं सिंह, जे.कृषि भूगोल।वाराणसी: वसुंधरा प्रकाशन।
8. मजूमदार, टी. एवं शर्मा, ए.भारत का कृषि भूगोल।नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
9. सिंह, जसबीर।भारत का कृषि भूगोल।नई दिल्ली: टाटा मैकग्रा–हिल प्रकाशन।
10. सिंह, आर. एल. एवं सिंह, राणा पी. बी.भारत का भौगोलिक अध्ययन।प्रयागराज: केंद्रीय प्रकाशन।
11. हुसैन, मजिद।कृषि भूगोल।नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
12. हुसैन, मजिद।भारत का भूगोल।नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
13. शर्मा, एच. एन.कृषि भूगोल के सिद्धांत एवं व्यवहार।नई दिल्ली: ज्ञानोदय प्रकाशन।
14. छत्तीसगढ़ शासन।आर्थिक सर्वेक्षण, छत्तीसगढ़।रायपुर: वित्त एवं योजना विभाग।
15. छत्तीसगढ़ शासन।छत्तीसगढ़ मानव विकास रिपोर्ट।रायपुर: योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग।
16. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय।कृषि परिवारों की स्थिति एवं ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था संबंधी रिपोर्ट।नई दिल्ली: भारत सरकार।
17. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)।भारतीय कृषि एवं फसल विविधीकरण संबंधी अध्ययन एवं प्रकाशन।नई दिल्लीरू भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद।
18. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय।कृषि एवं किसान कल्याण संबंधी वार्षिक रिपोर्ट।नई दिल्ली: भारत सरकार।
19. जिला प्रशासन, बिलासपुर।बिलासपुर जिले की कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन संबंधी जानकारी।बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
20. केंद्रीय भूजल बोर्ड।छत्तीसगढ़ के भूजल संसाधन एवं सिंचाई संबंधी अध्ययन।रायपुरध्नई दिल्ली: भारत सरकार।

****